अटलांटिक महासागर में पहले के अनुमान की तुलना में 10 गुना अधिक माइक्रोप्लास्टिक है: अध्ययन

खबरों में क्यों है?

- नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित एक नए शोध के अनुसार, अटलांटिक महासागर में 12-21 मिलियन टन माइक्रोप्लास्टिक्स हैं- जो पहले के अनुमान से लगभग 10 गुना अधिक है।

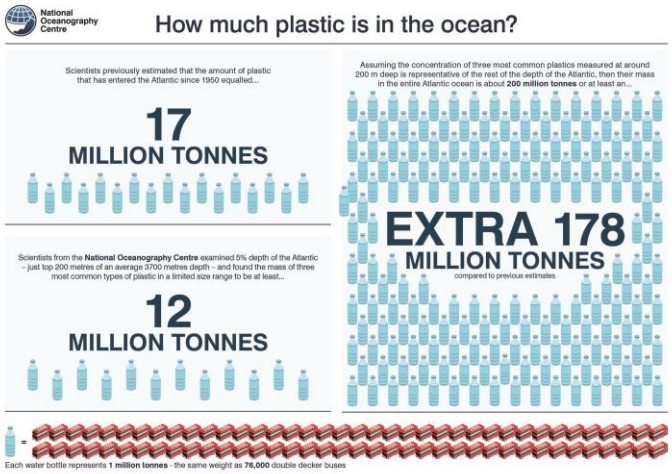

माइक्रोप्लास्टिक के संदर्भ में जानकारी

- प्लास्टिक, महासागरों और अन्य जल निकायों में पाया जाने वाला सबसे सामान्य प्रकार का समुद्री मलबा है।
- मलबा, किसी भी आकार और आकृति का हो सकता है, लेकिन जो मलबा लंबाई में 5 मि.मी. (या लगभग तिल के आकार का) से कम का होता हैं, उसे माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है।

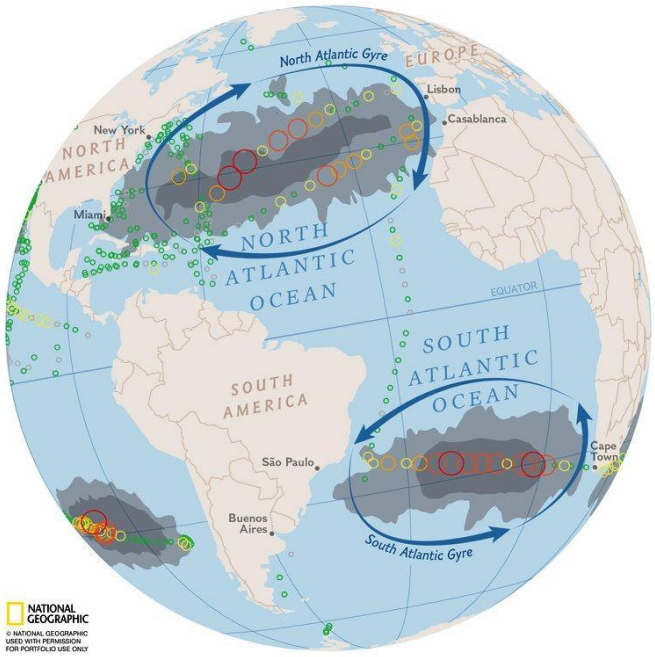

इन्हें इनके स्रोत के अनुसार, दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

A. प्राथमिक माइक्रोप्लास्टिक

- वातावरण में प्रत्यक्ष रूप से छोटे कणों के रूप में छोड़ा जाता है।

मुख्य स्रोत

a) सिंथेटिक कपड़ों की धुलाई (प्राथमिक माइक्रोप्लास्टिक्स का 35%)

b) ड्राइविंग के माध्यम से टायर का घर्षण (28%)

c) इरादतन रूप से व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों में मिलाया गया माइक्रोप्लास्टिक, उदाहरण के लिए: फेसियल स्क्रब में माइक्रोबीड्स (2%)

द्वितीयक माइक्रोप्लास्टिक्स

a) प्लास्टिक की थैलियों, बोतलों या मछली पकड़ने के जाल जैसी प्लास्टिक की बड़ी वस्तुओं के क्षरण से उत्पन्न होते हैं

माइक्रोप्लास्टिक्स के प्रभाव क्या हैं?

- माइक्रोप्लास्टिक, समुद्र में अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।
- समुद्र में पाए जाने वाले माइक्रोप्लास्टिक को समुद्री जानवरों द्वारा निगला जा सकता है।
- फिर प्लास्टिक इकठ्ठा होता है और खाद्य श्रृंखला के माध्यम से मनुष्यों में समाप्त हो सकता है
- ये बीयर, शहद और नल के पानी सहित भोजन और पेय में पाए जाते हैं।
- मानव स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव अभी तक ज्ञात नहीं है, लेकिन प्लास्टिक में प्राय: योजक शामिल होते हैं, जैसे स्टेबलाइजर्स या फ्लेम-रिटार्डेंट और अन्य संभवतः विषाक्त रासायनिक पदार्थ होते हैं, जो जानवर या मानव के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

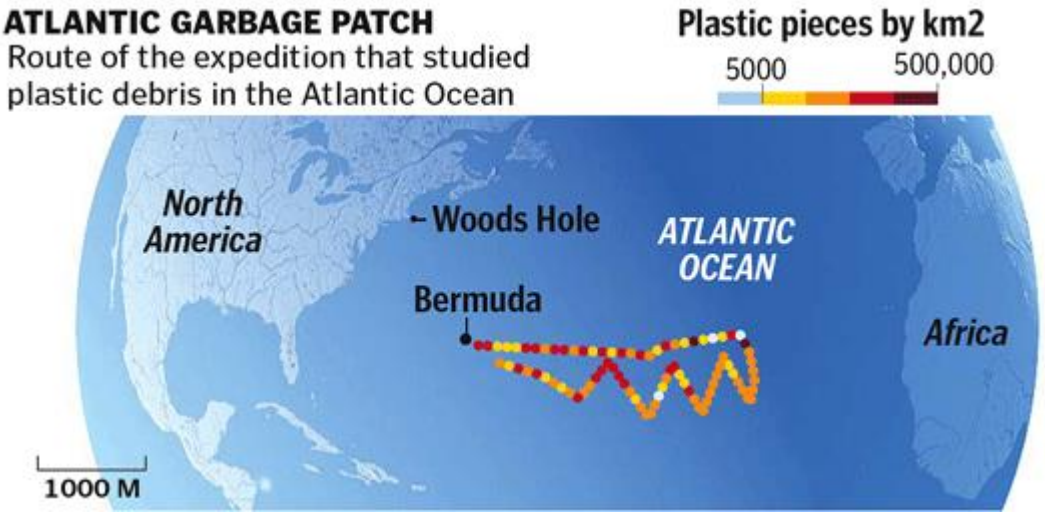

संबंधित जानकारी

वैश्विक पहल

- महासागरों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण के संदर्भ में पूरे विश्व में चिंताएं बढ़ रही हैं, जहां लगभग 50% एकल उपयोग वाले प्लास्टिक उत्पाद समुद्री जीवन को मारते हैं और मानव खाद्य श्रृंखला में प्रवेश करते हैं।
- इस संबंध में, यूरोपीय संघ ने वर्ष 2021 तक एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं जैसे कि स्ट्रा, फोर्क, चाकू और कॉटन बड्स पर प्रतिबंध लगाने की योजना बनाई है।
- चीन के शंघाई का वाणिज्यिक केंद्र, खानपान सेवाओं में एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग पर धीरे-धीरे प्रतिबंध लगा रहा है। इसके द्वीप प्रांत हैनान ने वर्ष 2025 तक एकल उपयोग प्लास्टिक को खत्म करने का प्रण लिया है।
- विश्व पर्यावरण दिवस, 2018 पर दुनिया के नेताओं ने "प्लास्टिक प्रदूषण को हराने" और इसके उपयोग को पूर्णतया समाप्त करने का प्रण लिया है।

भारत की पहल

- प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त और 2 अक्टूबर, 2019 को घोषणाएं की हैं कि भारत वर्ष 2022 तक एकल-उपयोग प्लास्टिक (एस.यू.पी.) के उपयोग को समाप्त कर देगा।
- इस योजना के लिए नोडल मंत्रालय पर्यावरण, वानिकी एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एम.ओ.ई.एफ. और सी.सी.) ने निम्न कार्यों को सुनिश्चित किया गया है:

a. इसका एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध को लागू करने का कार्य है।

b. इसका दुग्ध उत्पादों के लिए विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी के लिए लंबित नीति (एक नीतिगत दृष्टिकोण है, जिसके अंतर्गत उत्पादकों को आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण और/ या भौतिक रूप से पोस्ट-उपभोक्ता उत्पादों के निपटान या उपचार के लिए है) को अंतिम रूप देने में काम है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर III- पर्यावरण

स्रोत- डाउन टू अर्थ

शहरी वन योजना

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, ईटानगर को केंद्रीय पर्यावरण, वानिकी एवं जलवायु परिवर्तन (एम.ओ.ई.एफ.सी.सी.) मंत्रालय की 'नगर वन' या शहरी वन योजना के कार्यान्वयन के लिए चुना गया है।

नगर वन योजना के संदर्भ में जानकारी

- यह एम.ओ.ई.एफ.सी.सी. द्वारा सार्वजनिक-निजी-साझेदारी पर देश भर के 200 शहरी शहरों में वनों का निर्माण करने के लिए शुरू की गई योजना है।
- नगर वन या शहरी वन योजना को सी.ए.एम.पी.ए. (क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण) द्वारा वित्तपोषित किया जाएगा।
- इस योजना के अंतर्गत, छात्र स्कूल परिसर के भीतर चयनित स्थान पर अपने पेड़ उगाएंगे और इसकी देखभाल करेंगे।
- वर्ष के अंत में, वे पौधे ले जाएंगे और उन्हें अपने घर के परिसर में लगाएंगे।
- केंद्रीय मंत्रालय ने वर्ष 2024 तक 5,000 स्कूलों को शामिल करने के लक्ष्य के साथ इस वर्ष 1,000 स्कूलों को शामिल करने की योजना बनाई है।

संबंधित जानकारी

क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण के संदर्भ में जानकारी

- इसका गठन भारत के सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के बाद किया गया था।

- यह प्राधिकरण, केंद्रीय पर्यावरण एवं वानिकी मंत्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के रूप में कार्य करता है।
- इसे निगरानी करने, तकनीकी सहायता प्रदान करने और प्रतिपूरक वनीकरण गतिविधियों का मूल्यांकन करने के लिए स्थापित किया गया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर III- पर्यावरण

स्रोत- टाइम्स ऑफ इंडिया

अटल बीमित व्याक्ति कल्याण योजना

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.एस.) ने कोविड-19 महामारी के मद्देनजर इस वर्ष 24 मार्च से 31 दिसंबर के बीच नौकरी छूटने को प्रबंधित करने के लिए बेरोजगारी लाभ के रूप में तीन महीने की औसत मजदूरी के 50 प्रतिशत का भुगतान करने के मानदंडों में छूट प्रदान की है।
- ई.एस.आई.सी. ने अपनी अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना के अंतर्गत पात्रता मानदंड में छूट और बेरोजगारी लाभ के भुगतान में वृद्धि को मंजूरी प्रदान की है।

अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना के संदर्भ में जानकारी

- अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना, कर्मचारी राज्य बीमा (ई.एस.आई.) निगम द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा एक कल्याणकारी उपाय है।
- यह बीमित व्यक्तियों को नकद मुआवजा प्रदान करता है, जब वे बेरोजगार होते हैं।
- यह योजना वर्ष 2018 में शुरू की गई थी।

योजना के अंतर्गत लाभ

- यह योजना पिछली चार योगदान अवधि (चार योगदान अवधि/ 730 के दौरान कुल कमाई) के दौरान प्रतिदिन की औसत कमाई के 25% की सीमा तक छूट प्रदान करती है, जो बीमित व्यक्ति के जीवनकाल में एक बार अधिकतम 90 दिनों की बेरोजगारी का भुगतान करती है।

भत्ते की अवधि

- अधिकतम अवधि, जिसके लिए एक बीमित व्यक्ति, अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना (ABVKY) के अंतर्गत राहत प्राप्त करने के लिए पात्र होगा, जीवनकाल में 90 दिनों में एक बार कम से कम दो वर्ष के बीमा योग्य रोजगार के बाद और अंशदायी शर्तों के अधीन होगा।
- अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना के अंतर्गत राहत का दावा, उसकी/ उसकी तीन महीने की बेरोजगारी के बाद देय होगा।
- बेरोजगारी के स्पष्ट महीने के लिए राहत का भुगतान किया जाएगा। किसी भी संभावित दावे की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- यदि लाभार्थी को बेरोजगारी के तीन महीनों के बीच लाभकारी रोजगार मिलता है, जिसके लिए वह ए.बी.वी.के.वाई. के अंतर्गत राहत हेतु पात्र था, तो बेरोजगारी की तारीख और पुन: रोजगार की तारीख के बीच बेरोजगारी के स्पष्ट महीने के लिए राहत देय होगी।

पात्रता

- कर्मचारी, ई.एस.आई. अधिनियम 1948 की धारा 2(9) के अंतर्गत शामिल हैं।
- बीमित व्यक्ति (आई.पी.) को राहत का दावा करने की अवधि के दौरान बेरोजगार होना चाहिए था।
- बीमित व्यक्ति को दो वर्ष की न्यूनतम अवधि के लिए बीमा योग्य रोजगार में होना चाहिए।
- बीमित व्यक्ति को पूर्ववर्ती चार योगदान अवधियों में से प्रत्येक के दौरान 78 दिनों से कम का योगदान नहीं देना चाहिए था।
- उसके संबंध में योगदान नियोक्ता द्वारा भुगतान या देय होना चाहिए था।
- बेरोजगारी की आकस्मिकता, दुराचार या सेवानिवृत्ति या स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के लिए किसी भी सजा के परिणामस्वरूप नहीं होनी चाहिए।

टॉपिक- जी.एस. पेपर II- गवर्नेंस

स्रोत- लाइव मिंट

स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार 2020

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2020 की रिपोर्ट जारी की गई है।
- इस वर्ष 28 दिन पहले 4,000 से अधिक शहरों में स्वच्छता का सर्वेक्षण किया गया था।

रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं

- इंदौर ने लगातार चौथी बार सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार जीता है।

1 लाख से ऊपर की आबादी वाले शहरों के लिए सबसे स्वच्छ शहर पुरस्कार

- इंदौर (मध्य प्रदेश)
- सूरत (गुजरात)
- नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

1 लाख से कम आबादी वाले शहरों के लिए सबसे स्वच्छ शहर पुरस्कार

- कराड (महाराष्ट्र)
- सासवाद (महाराष्ट्र)
- लोनावला (महाराष्ट्र)

100 से अधिक शहरों के साथ सबसे स्वच्छ राज्य- छत्तीसगढ़

100 से कम शहरों वाला सबसे स्वच्छ राज्य- झारखंड

सबसे स्वच्छ गंगा शहर- वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

40 लाख से अधिक जनसंख्या के साथ सबसे स्वच्छ मेगासिटी- अहमदाबाद (गुजरात)

सबसे तेज गति से प्रगति करने वाली सबसे स्वच्छ राजधानी- लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

सबसे तेज़ गति से प्रगति करने वाली स्व-स्थायी स्वच्छ राजधानी- भोपाल (मध्य प्रदेश)

सबसे स्वच्छ गंगा शहर-

- कन्नौज (उत्तर प्रदेश)
- चुनार (उत्तर प्रदेश)

100 से अधिक शहरों के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला राज्य- महाराष्ट्र

100 से कम शहरों के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला राज्य- मध्य प्रदेश

संबंधित जानकारी

स्वच्छ भारत मिशन के संदर्भ में जानकारी

- स्वच्छ भारत मिशन (एस.बी.एम.) या स्वच्छ भारत अभियान (एस.बी.ए.) या स्वच्छ भारत मिशन, भारत में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच को समाप्त करने और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एस.डब्ल्यू.एम.) में सुधार करने के लिए 2014 से 2019 तक एक देशव्यापी अभियान था।

उद्देश्य

- स्वच्छ भारत अभियान का प्रमुख उद्देश्य, स्वच्छता और इसके महत्व के संदर्भ में जागरूकता फैलाना है।
- मिशन के अन्य उद्देश्यों में निम्न शामिल हैं:
- मैन्युअल रूप से सफाई कार्यों का उन्मूलन
- जागरूकता उत्पन्न करना और स्वच्छता प्रथाओं के संदर्भ में व्यवहार परिवर्तन लाना
- स्थानीय स्तर पर क्षमता में वृद्धि

लक्ष्य

- इस मिशन का लक्ष्य महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2019 को "खुले में शौच मुक्त" (ओ.डी.एफ.) भारत को प्राप्त करना है।

एस.डी.जी. लक्ष्य

- यह मिशन वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित सतत विकास लक्ष्य संख्या 6 (स्वच्छ जल एवं स्वच्छता) के लक्ष्य 6.2 की ओर प्रगतिशील है।

मिशन दो भागों में विभाजित किया गया है:

a. स्वच्छ भारत मिशन (शहरी), जिसकी आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित और निगरानी की गई थी।
b. स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), जिसकी पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय (अब जलशक्ति मंत्रालय कहा जाता है) के माध्यम से वित्तपोषित और निगरानी की गई थी।

स्वच्छ भारत 2.0

- एस.बी.एम. का दूसरा चरण 2020-21 और 2024-25 के बीच एक मिशन मोड पर 52,497 करोड़ रूपये के अनुमानित केंद्रीय और राज्य बजट के साथ लागू किया जाएगा।
- यह खुले में शौच मुक्त प्लस पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- खुले में शौच मुक्त (ओ.डी.एफ.) प्लस कार्यक्रम, विशेष रूप से ग्रे जल प्रबंधन के लिए मनरेगा के साथ जुटेगा और नए लॉन्च किए गए जल जीवन मिशन को पूरा करेगा।
- केंद्र और राज्यों के बीच निधि साझाकरण प्रारूप निम्न प्रकार होगा:

- पूर्वोत्तर राज्यों और हिमालयी राज्यों और जम्मू-कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 90:10 के अनुपात में
- अन्य राज्यों के लिए 60:40 के अनुपात में
- अन्य संघ शासित प्रदेशों के लिए, सभी घटकों के लिए 100:0 के अनुपात में

टॉपिक- जी.एस. पेपर II- गवर्नेंस

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

जीवन की डिजिटल गुणवत्ता सूचकांक 2020

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, जीवन की डिजिटल गुणवत्ता सूचकांक का दूसरा संस्करण सर्फशार्क द्वारा जारी किया गया था।

जीवन की डिजिटल गुणवत्ता सूचकांक के संदर्भ में जानकारी

- यह 85 देशों (डिजिटल जनसंख्या का 81%) में डिजिटल भलाई की गुणवत्ता पर एक वैश्विक शोध है।

मापदंड

अध्ययन उन पाँच मूलभूत स्तंभों के आधार पर देशों को सूचकांक में स्थान प्रदान करता है, जो जीवन की डिजिटल गुणवत्ता को परिभाषित करते हैं:

1) इंटरनेट की सामर्थ्य
2) इंटरनेट की गुणवत्ता
3) इलेक्ट्रॉनिक अवसंरचना
4) इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा
5) इलेक्ट्रॉनिक सरकार

सूचकांक की मुख्य विशेषताएं

- दक्षिणी एशिया में 35% (वैश्विक रूप से सबसे कम सक्रिय क्षेत्र) की तुलना में स्कैंडिनेविया में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या सबसे अधिक अर्थात 95% है।
- उच्च सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) अनुकूलन दर और इंटरनेट के उपयोग वाले देशों में इंटरनेट की गति (मोबाइल और ब्रॉडबैंड) अधिक है।

वैश्विक रैंकिंग

- जीवन की अधिकतम डिजिटल गुणवत्ता वाले 10 में से 7 देश, यूरोप में हैं।
- कनाडा, अमेरिका में सबसे अधिक डिजिटल गुणवत्ता वाले देश के रूप में उभरकर सामने आया है, जब कि जापान ने एशिया में अग्रणी स्थान ग्रहण किया है।

भारतीय रैंकिंग: भारत, 85 देशों में 57वे समग्र स्थान पर है।

- इंटरनेट सामर्थ्य: 9वें स्थान पर है और यू.के., अमेरिका और चीन जैसे देशों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं।
- इंटरनेट गुणवत्ता: 78वें स्थान पर है और स्तंभ के लगभग निचले भाग में है।
- ई-अवसंरचना: ग्वाटेमाला और श्रीलंका जैसे देशों के नीचे और 79वें स्थान पर है।
- इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा: इसमें भारत का 57वाँ स्थान है, इसमें भारत पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश से ऊपर है।
- इलेक्ट्रॉनिक सरकार: 15वां स्थान और भारत, ब्रिक्स और सार्क देशों में पहले स्थान पर है।

संबंधित जानकारी

इंटरनेट से संबंधित सरकारी पहल

- प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान है, जो नागरिकों को डिजिटल रूप से साक्षर बनाने में मदद करता है।
- भारत नेट कार्यक्रम, जो सभी ग्राम पंचायतों में एक ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क प्रदान करता है।
- डिजिटल इंडिया प्रोग्राम, जो भारत को ज्ञान आधारित परिवर्तन के लिए तैयार करने हेतु एक छात्रीय कार्यक्रम है।
- डिजिलॉकर, जो भारतीय नागरिकों को क्लाउड पर कुछ आधिकारिक दस्तावेजों को संग्रहीत करने में सक्षम बनाता है।

- भीम ऐप, जो डिजिटल भुगतान को सक्षम करने में मदद करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर II- गवर्नेंस

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

कोरोना फाइटर्स

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कोविड-19 पर कोरोना फाइटर्स नामक इस प्रकार का पहला इंटरैक्टिव अत्याधुनिक गेम लॉन्च किया है।

कोरोना फाइटर गेम के संदर्भ में जानकारी

- यह गेम कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए लोगों को सही उपकरण और व्यवहार सिखाने के लिए एक नया और बेहद रचनात्मक तरीका प्रस्तुत करता है।
- इस गेम को वास्तविक दुनिया में खिलाड़ियों के कार्यों को प्रभावित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, जिससे उन्हें सही सावधानी बरतने और संक्रमण से बचने के लिए जागरूक किया जाता रहे।

टॉपिक- जी.एस. पेपर III- स्वास्थ्य मुद्दा

स्रोत- ए.आई.आर.

पूर्वी कोलकाता आद्रभूमि

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, कोलकाता शहरी स्थानीय निकायों (यू.एल.बी.) को राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एन.जी.टी.) द्वारा पूर्वी कोलकाता आद्रभूमि में कचरे के निपटान पर अपने आदेश का पालन करने में विफल रहने के लिए सजा की चेतावनी दी है।

पूर्वी कोलकाता आद्रभूमि के संदर्भ में जानकारी

- यह एक रामसर स्थल (रामसर सम्मेलन के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महत्व के लिए नामित आद्रभूमि स्थल है) है।
- आर्द्रभूमि को ऐतिहासिक रूप से गंगा की सहायक नदी, बिद्याधरी के प्राकृतिक परिवर्तन द्वारा बनाया गया है।

संबंधित जानकारी

रामसर स्थल के संदर्भ में जानकारी

- यह एक आद्रभूमि (उथला पानी) है, जिसे आद्रभूमि के सम्मेलन के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महत्व के लिए नामित किया गया है।
- यह यूनेस्को द्वारा लगभग 50 वर्ष पहले (1971) स्थापित एक अंतर-सरकारी पर्यावरण संधि है।
- यह 1975 में लागू हुआ था और इसका नाम ईरानी शहर, रामसर से लिया गया, जहां सम्मेलन को अपनाया गया था।
- वर्तमान में भारत में 37 स्थल हैं, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आद्रभूमियों (रामसर स्थल) के रूप में नामित किया गया हैं।

अधिक जानकारी के लिए (http://wiienvis.nic.in/Database/ramsar_wetland_sites_8224.aspx) पर जाएं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर III- पर्यावरण

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस